छोटी चींटी से विशाल हाथी तक
डॉ. गोपालकृष्ण करनावर
जनवाचन आंदोलन
भारत ज्ञान विज्ञान समिति
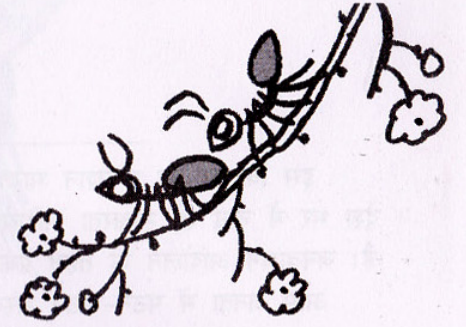
छोटी चींटी से विशाल हाथी तक

भारत ज्ञान विज्ञान समिति

इस किताब का प्रकाशन भारत ज्ञान विज्ञान समिति ने देश भर में चल रहे साक्षरता अभियानों में उपयोग के लिए किया है। जनवाचन आंदोलन के तहत प्रकाशित इन किताबों का उद्देश्य आम जनता में पठन-पाठन संस्कृति विकसित करना है।
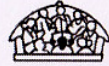
छोटी चींटी से विशाल हाथी तक डॉ. गोपालकृष्ण करनावर	***Chhoti Chinti Se Vishal Hathi Tak*** Dr. Gopalkrishna Karnavar
अंग्रेजी अनुवाद जे.के.वर्गीस	***English Translation*** J.K.Varghese
हिन्दी अनुवाद भोपाल सिंह रावत	***Hindi Translation*** Bhopal Singh Rawat
पुस्तकमाला संपादक तापोश चक्रवर्ती	***Series Editor*** Taposh Chakravorty
कॉपी संपादक कंचन शर्मा	***Copy Editor*** Kanchan Sharma
रेखांकन विजयन नैयत्तिकारा	***Illustration*** Vijayan Neyyattinkara
ग्राफिक्स जगमोहन	***Graphics*** Jagmohan
कवर गॉडफ्रे दास	***Cover*** Godfrey Das
तृतीय संस्करण जनवरी, 2015	***Third Edition*** January, 2015
सहयोग राशि 39 रुपये	**Contributory Price** Rs. 39
मुद्रण क्रिसेंट प्रिन्ट साल्युशन्स नई दिल्ली-110018	**Printing** Crescent Print Solutions New Delhi-110018
सौजन्य के.एस.एस.पी.	***Courtesy*** K.S.S.P.

Publication and Distribution

Bharat Gyan Vigyan Samiti

59/5, Third Floor, Ravidas Marg, Kalkaji , New Delhi - 110 019
Phone : 011 - 26463324, Fax : 91 - 011 - 26469773
Email : bgvs_delhi@yahoo.co.in, bgvsdelhi@gmail.com
website: www.bgvs.org

छोटी चींटी से विशाल हाथी तक

डॉ. गोपालकृष्ण करनावर

1
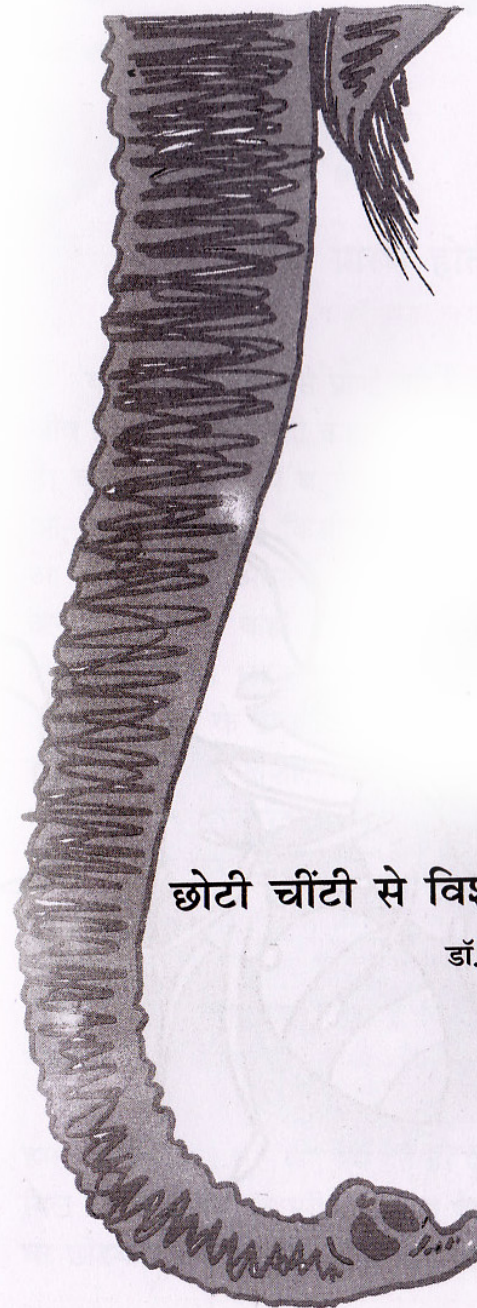
यात्रा प्रारंभ होती है

यह कहानी एक ऐसे प्राणी की है जो दुनिया में सबसे छोटा जीव है। अर्थात् चींटी की कहानी है। चींटियां कई प्रकार की होती हैं। चूंकि आकार में ये बहुत छोटी होती हैं इसलिए ये कहीं भी आ-जा सकती हैं। ये किसी आदमी, पशु या गाड़ी के नीचे भी आ जाती हैं तो आसानी से बच जाती हैं। बिना किसी की अनुमति लिए ये कहीं भी पहुंच जाती हैं। ये अच्छे-बुरे या तीज-त्यौहारों का ध्यान नहीं रखती। इन्हें सिर्फ भोजन चाहिए। अपना पेट भरने के उपरांत ये भविष्य के लिए भी भोजन इकट्ठा कर लेती हैं। आपातकाल या अकाल के समय इस एकत्रित भोजन का उपयोग करती है। आपको पता ही नहीं चलता कि ये अपना भोजन कब और कहां से प्राप्त करती है। आप अपना सामान कहीं भी छुपाएं, ये वहीं पहुंच जाती हैं। इन्हें किसी चीज का भय भी नहीं रहता। हां यदि आपने इन्हें चोट पहुंचाने की कोशिश की तो इन्हें पता रहता है कि कब किसको काटना है। कभी-कभी ये आपके कान में भी घुस जाती हैं।

यह कहानी ऐसे ही एक भूरे जोड़े की है। ये पति-पत्नी हैं। हम इन्हें भूरा और भूरी का नाम देते हैं। एक बार यह जोड़ा अपने बिल से निकलकर दूर मंदिर में मेला देखने जाता है। बच्चों को घर छोड़कर ये दोनों मियां-बीबी मौज-मस्ती के लिए चल पड़ते हैं
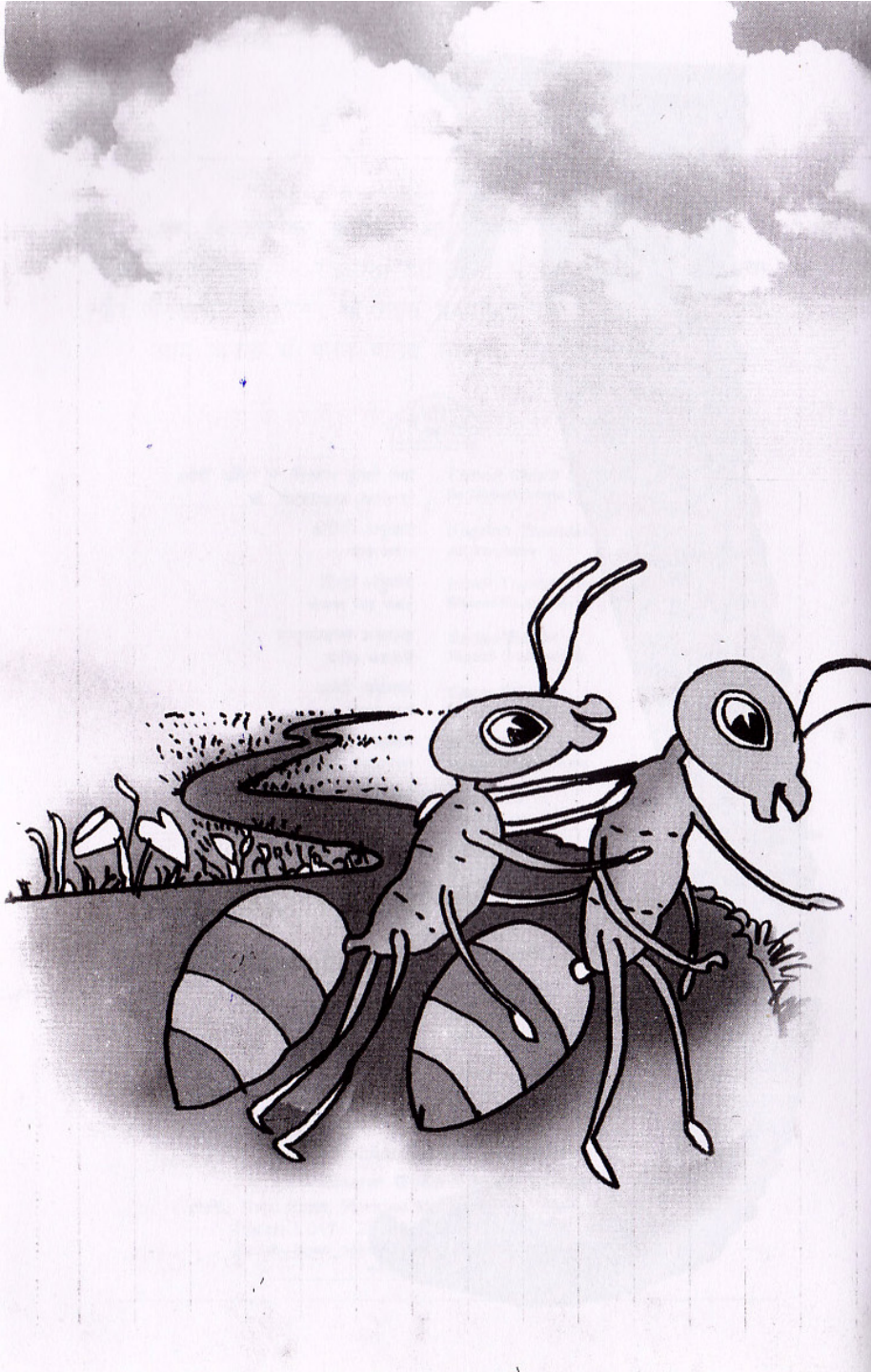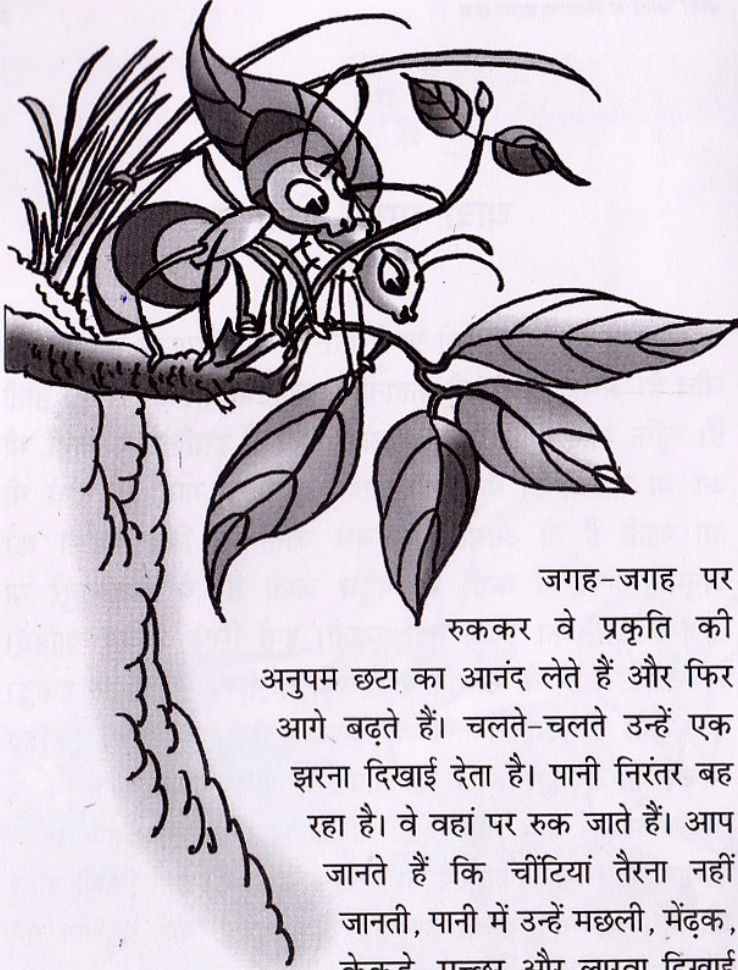
जगह-जगह पर रुककर वे प्रकृति की अनुपम छटा का आनंद लेते हैं और फिर आगे बढ़ते हैं। चलते-चलते उन्हें एक झरना दिखाई देता है। पानी निरंतर बह रहा है। वे वहां पर रुक जाते हैं। आप जानते हैं कि चींटियां तैरना नहीं जानती, पानी में उन्हें मछली, मेंढ़क, केकड़े, मच्छर और लारवा दिखाई देते हैं, जो पानी में खेलते हुए प्रसन्न दिखाई दे रहे हैं। जल-क्रीड़ा का भरपूर आनंद ले रहे हैं। वे दोनों सोचते हैं कि मेंढ़क पानी में कैसे रह लेते होंगे? इन्हें घुटन नहीं होती होगी? भूरा जानता है कि पानी में कई तरह के जीव-जंतु रहते हैं इसलिए उसने तय

किया कि एक दिन वे समुद्र के किनारे जाएंगे। हालांकि वह यह भी जानता है कि समुद्र बहुत दूर है। फिर उसने सोचा कि समुद्र तो मछली-गृह (एक्वेरियम) में भी दिखाई देता है। एक दिन वे शहर के मछली-गृह में गए।

2
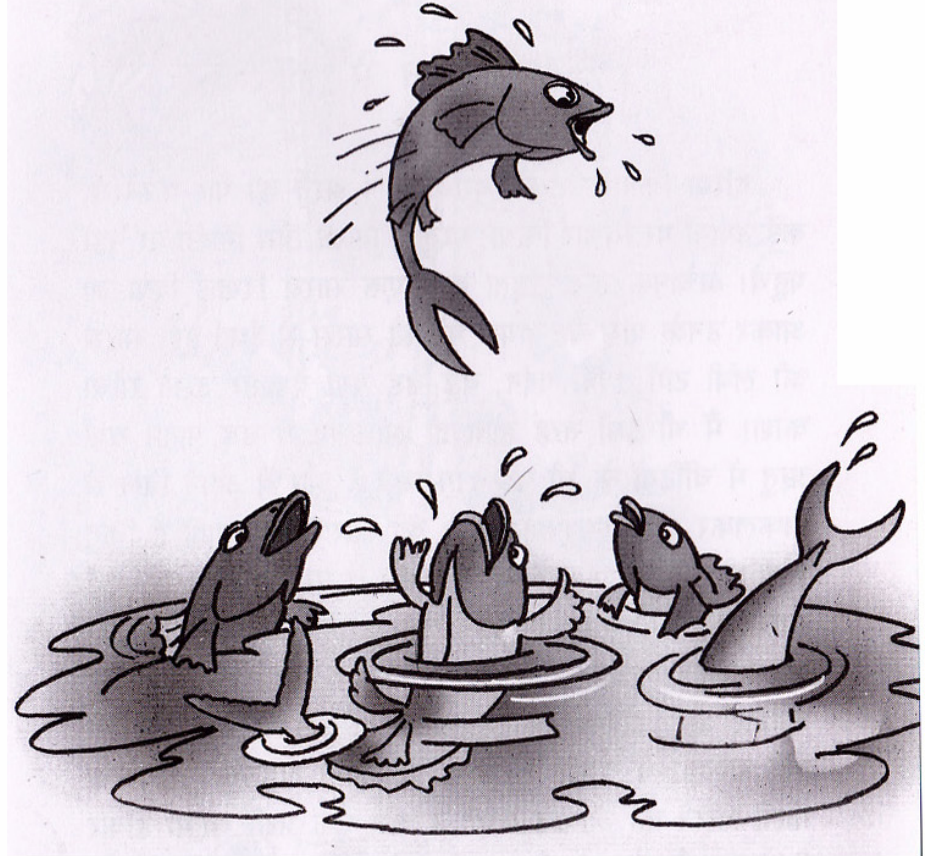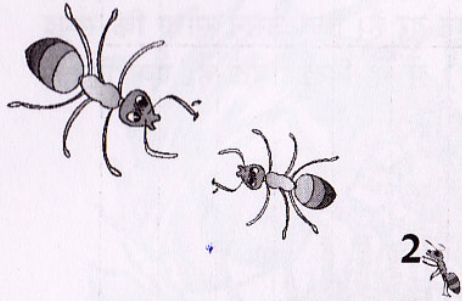
दूर गगन से

दरिया किनारे बैठकर भूरा-भूरी ने झरने को पार करने के कई उपायों पर विचार किया, परंतु वे किसी ठोस निर्णय पर नहीं पहुंचे। अचानक उन्हें उड़ता हुआ एक सारस दिखाई दिया जो आकर उनके पास बैठ गया। भूरे को सारस से ईर्ष्या हुई। सारस की लंबी टांगें, लंबी गर्दन, बड़े-बड़े पंख देखकर उसने सोचा काश! मैं भी इसी तरह होता तो आसमान में उड़ पाता। वर्षा ऋतु में चींटियों के भी पंख लग जाते हैं और वे अपने बिल से निकलकर दूर गगन (आसमान) की ओर उड़ने लगती हैं किंतु शीघ्र ही उनके पंख टूटने लगते है और वे मर जाती हैं। भूरा-भूरी सारस की टांगों की ओर बढ़ने लगे। उन्होंने सोचा कि जैसे ही सारस उड़ने लगेगा तो वे भी उसके साथ उड़ने लगेंगे। उनका आकार छोटा होने के कारण सारस को इस बात का पता भी नहीं चलेगा। वे सारस की टांगों पर चलने लगते हैं। अचानक गोली चलने की आवाज आती है और एक पक्षी जख्मी होकर गिर जाता है। सारस सहित सभी पक्षीगण वहां से भाग जाते हैं।
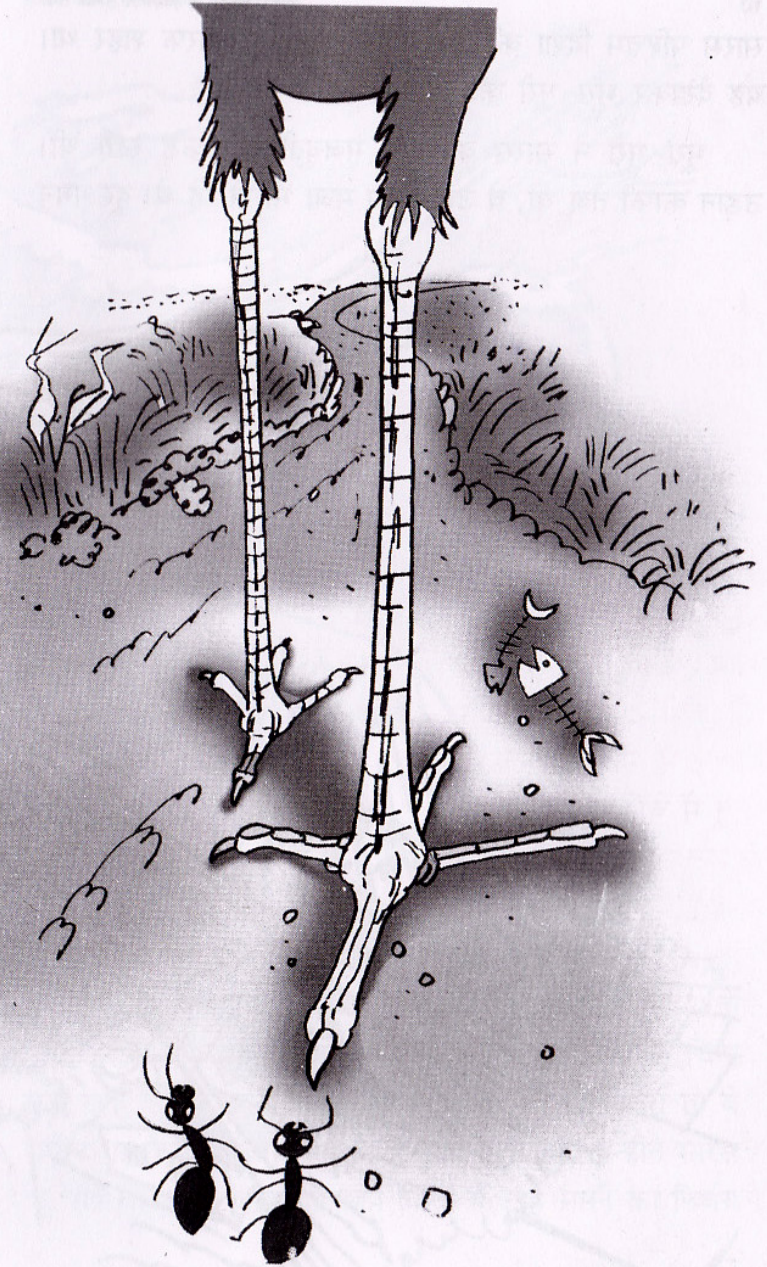
सारस पश्चिम दिशा की ओर उड़ने लगा। उस तरफ शहर था। यह देखकर भूरा-भूरी को राहत मिली।

भूरा-भूरी ने सारस की टांगें मजबूती से पकड़ रखी थीं। उड़ान काफी तेज थी, वे उड़ान का मजा भी ले रहे थे। दूर गगन

से पृथ्वी के जीव-जंतु उन्हें बहुत छोटे दिखाई दे रहे थे, यात्रा निरंतर जारी थी। सारस चलता जा रहा था। भूरा-भूरी को चिंता सता रही थी कि यदि सारस कहीं जमीन पर नहीं उतरा तो वे जमीन पर कैसे पहुंचेंगे? थोड़ी देर सोचने के बाद उन्होंने सारस के पंख के भीतर जाकर उसकी त्वचा में डंक मारने का निर्णय
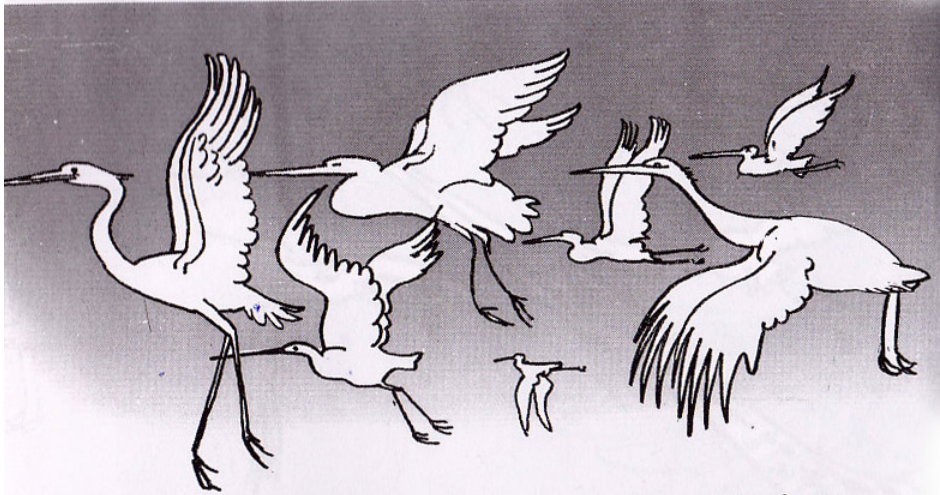
किया। उन्हें लगा कि डंग मारने पर सारस कहीं न कहीं उतरेगा। भूरा पंख के भीतर गया और भूरी के संकेत का इंतजार करने लगा। भूरी को जब नीचे शहर दिखाई दिया तो उसने भूरे को इशारा किया। भूरे ने संकेत पाकर जोर का डंक मारा। सारस को असहनीय दर्द हुआ तो वह नीचे उतरकर एक पेड़ की टहनी पर
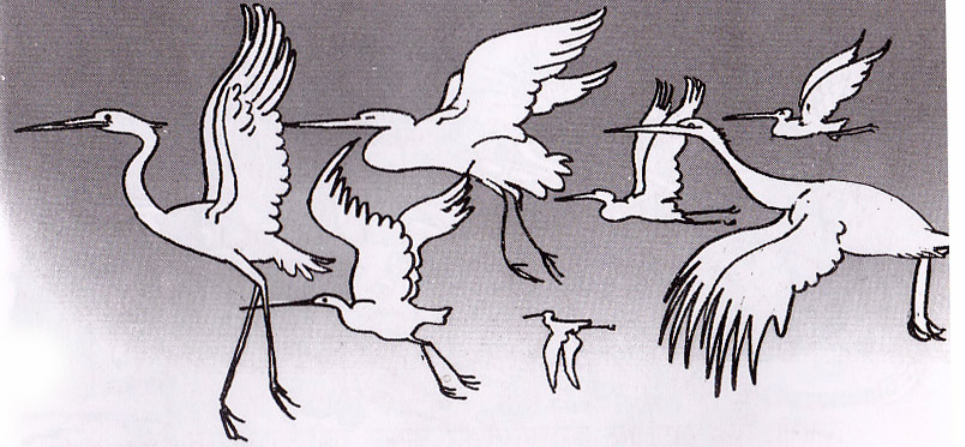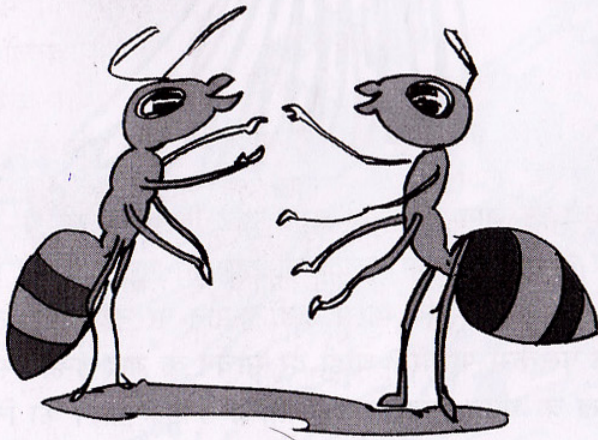
बैठ गया। भूरा-भूरी सारस की टांग से उतरकर तेज-तेज चलने लगे। वे डर के मारे सारस को धन्यवाद देना भी भूल गए। थोड़ी देर पेड़ पर बैठने के बाद उन्हें भूख सताने लगी, अब वे भोजन की तलाश में थे। पेड़ से उतरकर वे एक पार्क में चले गए। पार्क में बच्चे खेल रहे थे, उनके पास नाना प्रकार की भोजन सामग्री थी। पौधों में फूल खिले हुए थे। वे धीरे-धीरे बच्चों की तरफ गए, बच्चों ने इस ओर ध्यान नहीं दिया। धीरे-धीरे वे खाने की प्लेटों की तरफ बढ़े। प्लेटों में मिठाईयां और केक थे, उन्होंने भरपेट खाना खाया और जब थक गए तो वहीं एक पत्ते के नीचे सो गए। जब उनकी नींद खुली तो शाम हो गई थी। भूरे ने चारों तरफ देखा और अनुमान लगाया कि वास्तव में वे कहां पर हैं। चारों तरफ उसे भीड़ ही भीड़ दिखाई दे रही थी। असल में सभी कीड़ों की यह विशेषता है कि उनकी नजर कम से कम सौ आंखों में बदल जाती है। वे इन्हीं छोटी आंखों से

छोटी-छोटी चीजों को भी देख लेते हैं। भरा ने देखा कि बच्चे भी खेलना बंद कर रहे हैं। भूरा-भूरी भी चलने की तैयारी करने लगे और एक बच्चे के बैग में घुस गए। बच्चे ने बैग उठाया और वे एक नई यात्रा पर चल पड़े।
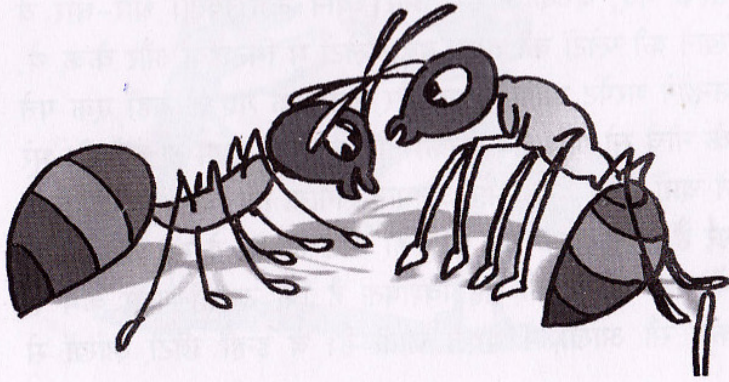
3

बगीचे में

बगीचे में कई प्रकार के फूल खिले हुए थे, भूरा यह दृश्य देखकर बहुत खुश हुआ। वे फूलों पर मंडराने लगे और फूलों का रसपान करने लगे, किंतु थोड़ी ही देर में उनकी योजना खटाई में पड़ने लगी क्योंकि तुरंत ही मधुमक्खियां फूलों पर भिनभिनाने लगीं। वे बहुत खुश और जोश में दिखाई दे रहीं थी। उनका काम शहद एकत्र करना और छोटी मधुमक्खियों,
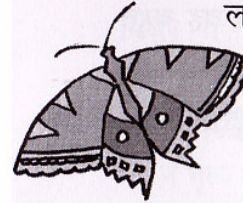
रानी मधुमक्खी और आलसी नर मधुमक्खी के लिए भोजन जुटाना था। साथ ही वर्षा ऋतु के लिए भी भोजन की व्यवस्था करना था।

फूलों के आस-पास नाना प्रकार की रंग-बिरंगी तितलियां भी उड़ रही थीं। उनकी आवाज बहुत मधुर थी, वे फूलों को नुकसान पहुंचाए बिना उन पर बैठ जाती थीं, ऐसा लगता था मानों वे संगीत की स्वर लहरियां बिखेर रही हों। मधुपान के बाद वे उड़ जाती थीं।

भूरे के मन में तितलियों के प्रति बड़ा आदर भाव था, क्योंकि वे बहुत सहज रूप में फूलों से खेलती थीं, उन्हें नुकसान नहीं पहुंचाती थीं। फूल भी उनका स्वागत करते थे और उन्हें स्वादिष्ट भोजन करवाते थे। तितलियों से अपनी तुलना करने पर भूरे को हीन भावना घेर लेती थी, उसे लगता जैसे कि वह बहुत बड़ा चोर है।

4
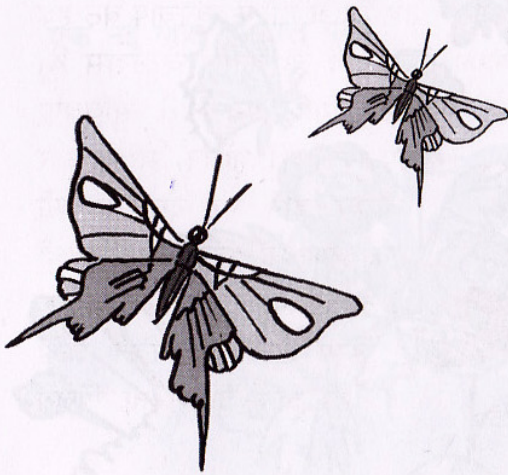
पिंजरे के भीतर

अब भूरा-भूरी एक पिंजरे के निकट जाते हैं जोकि बगीचे के एक किनारे पर रखा हुआ था। पिंजरे में कई पक्षी रखे हुए थे। पीली चिड़िया, तोता, मोर और सफेद कबूतर इसके भीतर थे। ये सभी पक्षी बहुत उदास लग रहे थे। ये न तो गा रहे थे, न नृत्य कर रहे थे और न उड़ रहे थे बल्कि चुपचाप बैठे हुए थे। शायद अपनी स्वतंत्रता छिन जाने के कारण वे उदास थे। हालांकि यहां पर सारी सुविधाएं उपलब्ध थीं। भोजन, सुरक्षा और बीमार होने पर दवाईयों की व्यवस्था थी, किंतु जब आजादी छिन जाती है तो सब कुछ, हंसी-खुशी भी, छिन जाता है। फिर पिंजरा तो पिंजरा
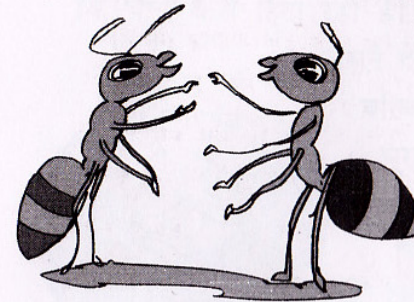
ही है चाहे वह सोने के तारों से क्यों न बना हो। पक्षी तो उन्मुक्त आकाश के स्वामी हैं। उड़ना ही इनका धर्म है। कुछ ऐसे पक्षी भी हैं जो उड नहीं सकते, जैसे शुतुरमुर्ग और एमू। भूरा शुतुरमुर्ग की चाल के बारे में सोचने लगा। उसने सोचा कि जितनी दूरी वह एक मिनट में तय कर सकता है उतनी दूरी तय करने में उसे स्वयं कई घंटे लग जाएंगे।

5
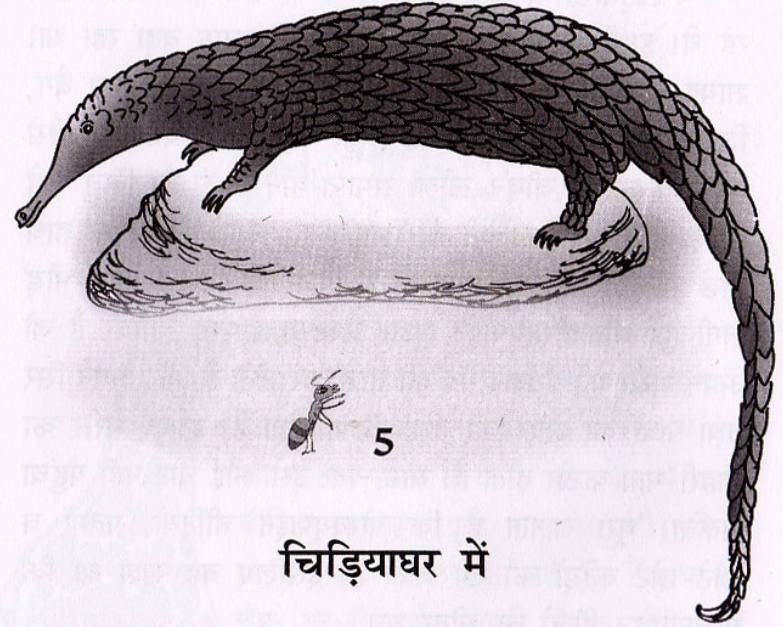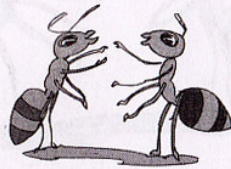
चिड़ियाघर में

अचानक भूरे के कान में कुछ लड़कों के चिल्लाने व हंसने की आवाज आई। उसने देखा कि एक लड़के के हाथ में सूखी टहनी थी जिसमें एक हरा पत्ता भी था। बाकी बच्चे उसके पीछे चल रहे थे। हरी पत्ती आगे को हिल रही थी। भूरा सोचने लगा कि पत्ती कैसे हिल रही है। वह थोड़ा और निकट आया तो उसने देखा कि यह तो पत्ता है ही नहीं, बल्कि यह एक प्रकार का कीड़ा है। भूरा जानता है कि कुछ कीड़े और जानवर अपने शत्रुओं से बचने के लिए ऐसा रंग-रूप धारण कर लेते हैं।

ये लड़के हाथी और उसके बच्चे के पास मस्त होकर खेल रहे थे। हाथी अपनी सूंड को लड़कों की तरफ बढ़ा रहा था। शायद खाने के लिए कुछ मांग रहा हो। लड़के ने अपना बैग, जिसमें भूरा-भूरी थे, हाथी की तरफ बढ़ाया, भूरे को लगा जैसे कि अब उनकी जीवन-लीला समाप्त होने वाली है। किंतु जैसे ही हाथी बैग को खींचने के लिए बढ़ा, लड़के ने अपना हाथ पीछे खींच लिया। पोरक्यूपाइन के पिंजरे के निकट बहुत भीड़ लगी हुई थी। पोरक्यूपाइन सुअर जैसा एक ऐसा जानवर है जो अपने शरीर को ऐंठकर गेंद की तरह कर लेता हैं और अपने सिर तथा पांवों को अंदर की तरफ छिपा लेता है। इसके शरीर का बाहरी भाग कठोर होता है। सामान्यत: इसे कोई चोट नहीं पहुंचा सकता। भूरा जानता है कि पोरक्यूपाइन चींटियों, पतंगों व छोटे-छोटे कीड़ों को खा जाता है। इसलिए वह खुश था कि पोरक्यूपाइन पिंजरे के भीतर था।

अब यह जोड़ा जिराफ के निकट पहुंचा। जिराफ बहुत बड़ा
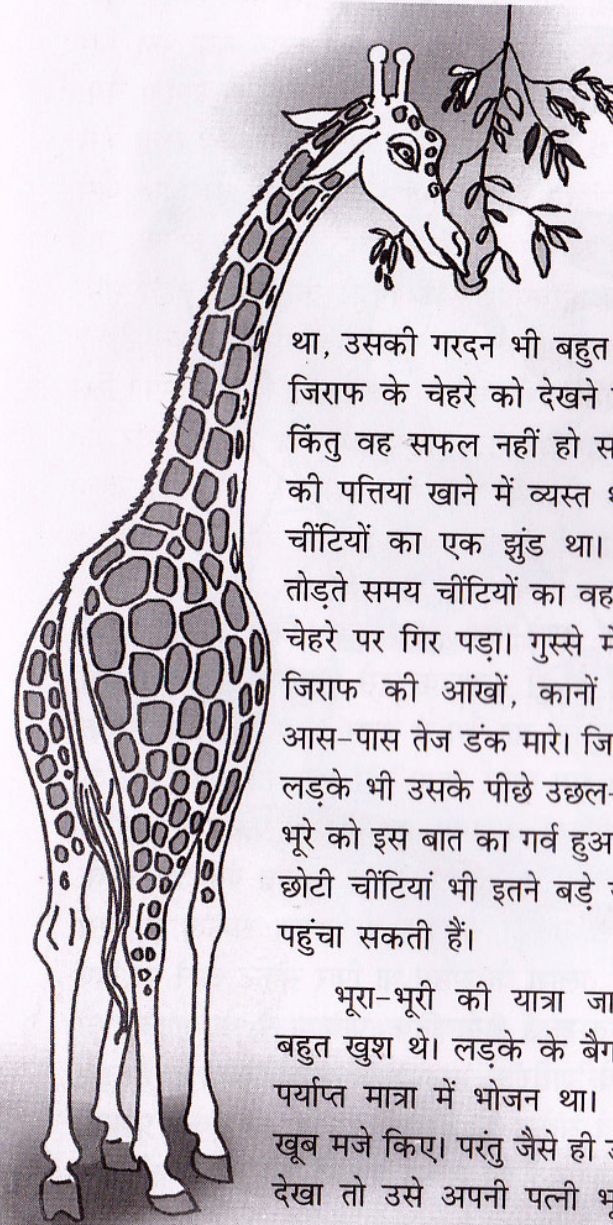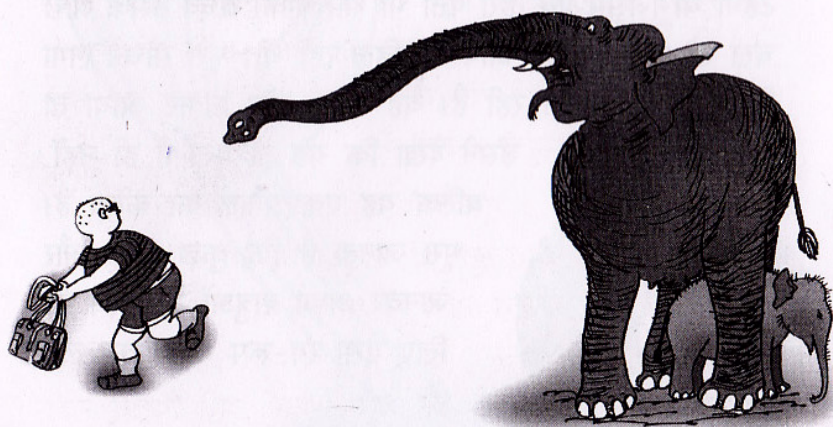
था, उसकी गरदन भी बहुत लंबी थी। भूरे ने जिराफ के चेहरे को देखने की कोशिश की, किंतु वह सफल नहीं हो सका। जिराफ पेड़ की पत्तियां खाने में व्यस्त था। पेड़ में लाल चींटियों का एक झुंड था। पेड़ की पत्तियां तोड़ते समय चींटियों का वह झुंड जिराफ के चेहरे पर गिर पड़ा। गुस्से में इन चींटियों ने जिराफ की आंखों, कानों और नथुनों के आस-पास तेज डंक मारे। जिराफ दौड़ने लगा, लड़के भी उसके पीछे उछल-कूद करने लगे। भूरे को इस बात का गर्व हुआ कि देखो इतनी छोटी चींटियां भी इतने बड़े जानवर को चोट पहुंचा सकती हैं।

भूरा-भूरी की यात्रा जारी थी और वे बहुत खुश थे। लड़के के बैग में उनके लिए पर्याप्त मात्रा में भोजन था। भूरे ने पूरे दिन खूब मजे किए। परंतु जैसे ही उसने आस-पास देखा तो उसे अपनी पत्नी भूरी दिखाई नहीं
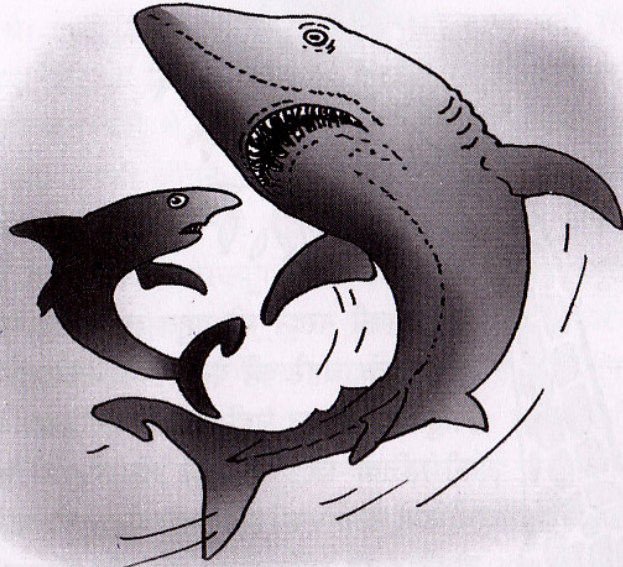
दी। उसने बैग के आगे-पीछे बहुत ढूंढ़ा, किंतु उसकी बीबी नहीं मिली। थोड़ी देर में अचानक उसे आवाज आई और भूरी ने उसे संकेत दिया कि वह बैग से बाहर आ गई है और लड़के की कमीज में है। भूरा बाहर आया और भूरी को वापस बैग के अंदर ले गया। चींटियों के पास एक विशेष प्रकार की शक्ति होती है जिनके जरिए वे कई प्रकार के संकेत देती हैं। उनके संकेतों को केवल उनका समुदाय ही समझ सकता है। ऐसे संकेत भोजन की तलाश के समय या फिर संकट आने पर दिए जाते हैं। ये संकेत कुछ रासायनिक प्रक्रियाओं के माध्यम से दिए जाते हैं। इनके शरीर से रासायनिक पदार्थ निकलता है। इस पदार्थ के जरिए वे संकेत देते हैं। यदि मानव की संकेत प्रणाली से चींटियों और जानवरों की संकेत प्रणाली की तुलना की जाए

तो इनकी प्रणाली ज्यादा कारगर होती है। इस पर कोई खर्चा भी नहीं होता, जबकि मानव अपने संकेतों के लिए कई साधनों का प्रयोग करता है।
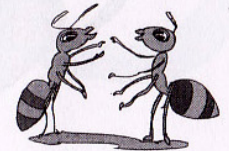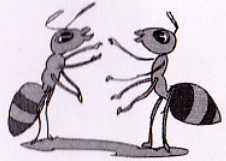
6

सांप

अब लड़के उस दिशा की ओर गए जहां सांप रखे हुए थे। भूरा को भी सांप देखने की इच्छा हुई, हालांकि उसने पहले भी सांप देखे हुए थे और कई बार वह सांप के बिल में भी घुसा था। कुछ सांप जहरीले होते हैं तो कुछ जहरीले नहीं होते। सांप अपने भोजन के लिए चूहों को पकड़कर खाते हैं। चूहे बड़े बदमाश होते हैं। ये मानव जाति के लिए हानिकारक होते हैं। चूहों को खाकर सांप एक प्रकार से मानव जाति का हित करते हैं। किंतु मनुष्य सांप के प्रति बहुत निर्दयी है। मनुष्य को जहां भी सांप दिखाई देता है वह उसे मार देता है। मनुष्य सांप से डरता है कि कहीं सांप उसे काट न ले। जबकि सच यह है कि जब तक कोई सांप को छेड़ता नहीं तब तक वह किसी को नहीं काटता। सांपों की खाल उतारने के लिए भी मनुष्य सांप को मारता है। सांप की खाल पर्स, बेल्ट और अन्य कीमती सामान बनाने

के काम आती है। सांपों को कई तरह से पकड़ा जाता है। इसकी पूंछ पकड़कर हवा में घुमाया जाता है और फिर इसे जमीन पर पटककर इसकी हड्डी तोड़ दी जाती है। इस प्रकार सांप अधमरा हो जाता है। फिर इसके सिर पर वार किया जाता है। सिर को चूर-चूर कर दिया जाता है। आदमी बड़ा निर्दयी होता है। फिर गर्दन की ओर से इसकी खाल निकालता है। मनुष्य का यह व्यवहार बड़ा अनैतिक है जबकि सांप आदमी का मित्र है। ऐसा सोचते हुए भूरे को बड़ी दया आई।

कांच से बने पिंजरे में कई जहरीले सांप, अजगर, और नाग थे। इनमें दो सिर वाला नाग (कोबरा) भी था। इसके सिर और पूंछ को पहचान पाना कठिन है। यह लड़कों के कौतुहल का विषय था। दूसरे पिंजरे में एक छोटा हरा सांप था जो एक किनारे से दूसरे किनारे की तरफ उछल-कूद कर रहा था। इस प्रकार के सांप हरे-भरे पत्तों वाले पेड़ों में पाए जाते हैं। जब ये हरे पत्तों के बीच में होते हैं तो इन्हें ढूंढना मुश्किल होता है। मनुष्य ऐसे सांपों से बहुत डरता है। ऐसी मान्यता है कि ये उड़कर मनुष्य की आंखों को जख्मी कर देते हैं। लड़के सांपों से डर रहे थे, किंतु उनके साथ खेलने में भी उन्हें मजा आ रहा था। भूरा की इच्छा भी यही थी कि बच्चे खूब खेलें-कूदें। वह स्वयं भी चींटियों के बच्चों को खेलने की आजादी देता था। उसकी सोच थी कि सभी प्राणी समान है। किसी को भी किसी पर शासन करने की

छूट नहीं देनी चाहिए। हर एक को सबकी भलाई के लिए काम करना चाहिए। सभी को प्यार से रहना चाहिए और आपस में लड़ना नहीं चाहिए। जो इन बातों को नहीं मानता था भूरा उनको सजा भी देता था। भूरी की भी यही शिकायत थी कि भूरा बच्चों के प्रति बहुत उदार है। लेकिन भूरे का उत्तर होता था कि बच्चों को क्यों गुलाम बनाकर रखा जाए, उनकी अपनी जीवन-शैली है। उन्हें अपने हिसाब से स्वतंत्र रहने दिया जाए।

7
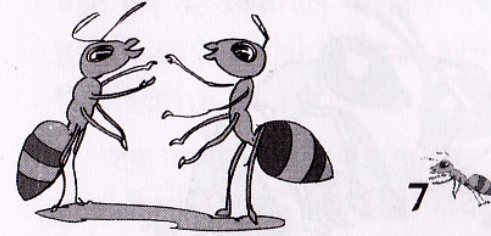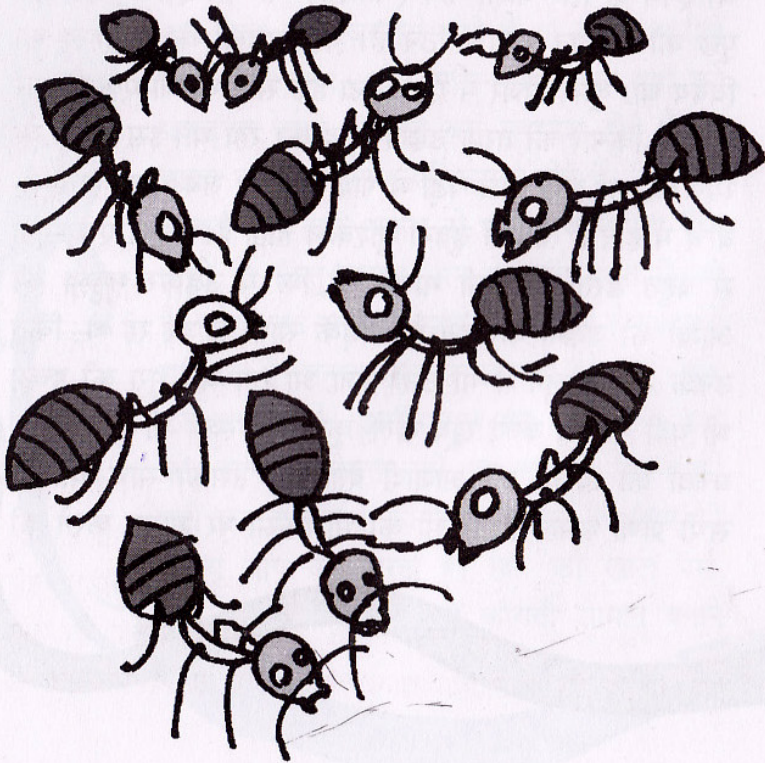
चींटियां

बाहरी दुनिया में इसके विपरीत होता था, किंतु प्रत्येक बिल में ऐसे कई गुलाम होते हैं। भूरा को यह बात पसंद नहीं थी, किंतु चींटियां जब अपनी कॉलोनी या समुदाय में होती है तो उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। बिल की चींटियां खुद भोजन लाने का काम नहीं करती, अन्य चींटियां इनके लिए भी भोजन की व्यवस्था करती हैं। उन्हें दूसरे के लिए भी काम करना पड़ता है। ऐसी स्थिति में चींटियों के नेता मिलकर योजना बनाते हैं कि निकट के बिलों से कुछ ताकतवर चींटियों को पकड़कर लाया जाए या उनका अपहरण किया जाए। किंतु यह काम आसान नहीं है। यदि दूसरे बिल की चींटियां ज्यादा हैं या अधिक शक्तिशाली हैं तो जो चींटी उन्हें पकड़ने जाती है वह स्वयं वहां पकड़ में आ जाती है। फिर इन्हें ही गुलाम बनाया जाता है। कुछ चींटियां दूसरे बिलों की जासूसी भी करती हैं और इस बात का पता लगाती हैं कि दूसरे बिल की चींटियों की संख्या कितनी है और उनके लड़ने की क्षमता कितनी है। यदि उन्हें लगता है कि सामने वाला कमजोर है तो वे प्रसन्नता से
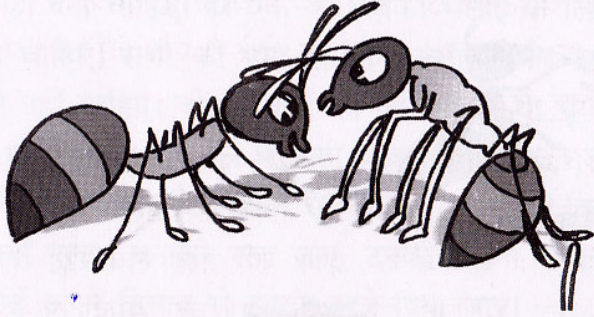
अपने बिल में आकर वहां की जानकारी देती हैं। वापस आते समय रास्ते में कुछ पहचान चिह्न छोड़ आती हैं, जिससे कि वे आसानी से वहां पहुंच सकें। वापस आने पर स्थिति का जायजा लिया जाता है और फिर नेता लोग आगे की रणनीति बनाते हैं और सही समय पर आक्रमण किया जाता है तथा ज्यादा से ज्यादा चींटियों को पकड़ने की कोशिश की जाती है। फिर उनके साथ गुलामों जैसा व्यवहार किया जाता है। गुलामों से कठिन काम लिया जाता है।

लड़के अब बस में सवार हो गए हैं। कुछ दूरी पर बच्चे उतर जाते हैं। वहां पर बहुत बड़ा भवन, बगीचा और तालाब है। भवन के अंदर एक अलग तरह का संसार है। चमकदार दीवार, रंग-बिरंगा प्रकाश उनका स्वागत करता है। दीवार पर पशुओं की आकृतियां बनी हुई हैं, जो जिंदा पशुओं की तरह लगते हैं। वहां पर एक स्थान पर्वतीय क्षेत्र जैसा भी है। एक कांच का तालाब भी है। तालाब के भीतर नीला पानी है। पानी के अंदर मछलियां और अन्य जानवर हैं। भूरा-भूरी को ऐसा लगता है जैसे वे समुद्र के अंदर आ गए हैं। बच्चे शीशे से बने टैंक को देख रहे थे। टैंक

बहुत बड़े थे, उनके तले में सफेद पत्थर और चमकदार रेत रखी हुई थी। उनमें पौधे भी थे। रेत के नीचे से एक विचित्र प्राणी का सिर दिखाई दिया।

तब धीरे से एक रंग-बिरंगा फूल पानी के भीतर से खिलता हुआ दिखाई दिया। छोटे-छोटे हाथों की तरह उसकी रंगीन पंखुड़ियां थीं। यह जीवित प्राणी की तरह लग रहा था और जादुई तरीके से हिल-डुल रहा था। यह समुद्री पुष्प बहुत आकर्षक था। भूरा-भूरी ने ऐसा दृश्य पहले कभी नहीं देखा था। समुद्री प्रवाल (कोरल) पानी में खेल रहा था। जब बड़ी मछली अपने को गुलेल की तरह समेट लेती है और प्रवाल के निकट आती है तो ऐसा लगता है जैसे कि वह उसको खा लेगी। भूरे को एक पल के लिए लगा कि कोरल तो अब गया और यह बदमाश मछली इसको खा जाएगी। जब तक भूरे को कुछ समझ में आता तब तक कोरल फिसलकर रेत के नीचे चला गया। कोरल ने सुई की नोंक की तरह बाणों से मछली की आंख को छेद दिया। अब वह मछली-गृह की तरफ बढ़े। टैंकों में विभिन्न रंगों को देखकर भूरा-भूरी को आश्चर्य हुआ। कोरल के जंगल समुद्र में सामान्यतया दिखाई देते हैं। हजारों कोरल मिलकर पानी के नीचे रंग-बिरंगे खूबसूरत जंगल बनाते हैं। कोरल और मछलियों के अतिरिक्त कई अन्य जीव-जंतु देखकर भूरा-भूरी बहुत खुश हुए।

8
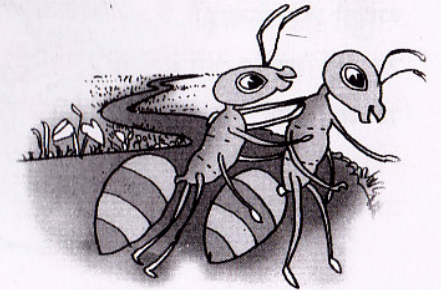
वायलिन वादक और रानी

समय अबाध गति से निकल रहा था, अभी बहुत चीजें देखने को थी। वे चलते गए। पहली बार वे समुद्र के किनारे खड़े थे। एक आलसी केकड़ा बाहर आया। वह किनारे-किनारे चलने लगा। चलते समय इसने अपने आगे की दाईं टांग को झंडे की तरह पकड़ रखा था, अब वह गुनगुनाने लगा। धीरे-धीरे एक और केकड़ा बाहर आया और उसके साथ चलने लगा। शायद यह मादा केकड़ा थी। दोनों नृत्य करने लगे। उनके संगीत और नृत्य को देखकर कुछ और केकड़े बाहर आए। एक केकड़े ने खुद को अपने खोल में ढक रखा था। दुश्मनों से बचने के लिए उसने ऐसा किया था। वह रानी केकड़ा था। केकड़ों की और भी प्रजातियां हैं। समुद्री तट केकड़ों के रंग-बिरंगे खोलों से भरा था।

9
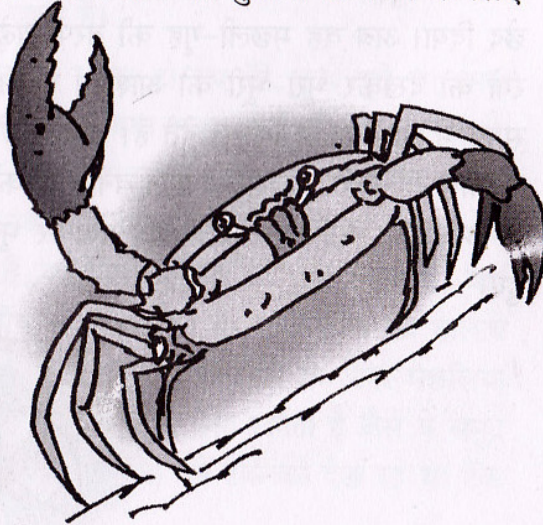
स्याहीवाला

अचानक ऐसा लगा कि किसी ने समुद्र में स्याही गिरा दी है। भूरे को लगा कि इन नटखट लड़कों ने अपने कलमों से स्याही गिरा दी है। परंतु सभी ने इस बात से इंकार कर दिया। उसी समय नीचे पानी में से एक जानवर ऊपर आया। उसका शरीर बहुत पतला और अंगुलियों की तरह था। वह समुद्र में तैरने लगा। भूरे को इस जानवर का नाम मालूम नहीं था, थोड़ी देर में उसने देखा कि यह जानवर पानी में एक प्रकार का तरल पदार्थ छोड़ रहा है। ऐसा माहौल उत्पन्न किया गया कि जैसे उसके शत्रु उसे खोज न सकें। इन तरीकों से वह अपने शत्रुओं से अपनी रक्षा करता था।

पानी का एक जहाज समीप ही जा रहा था, पानी बड़ी तेजी से
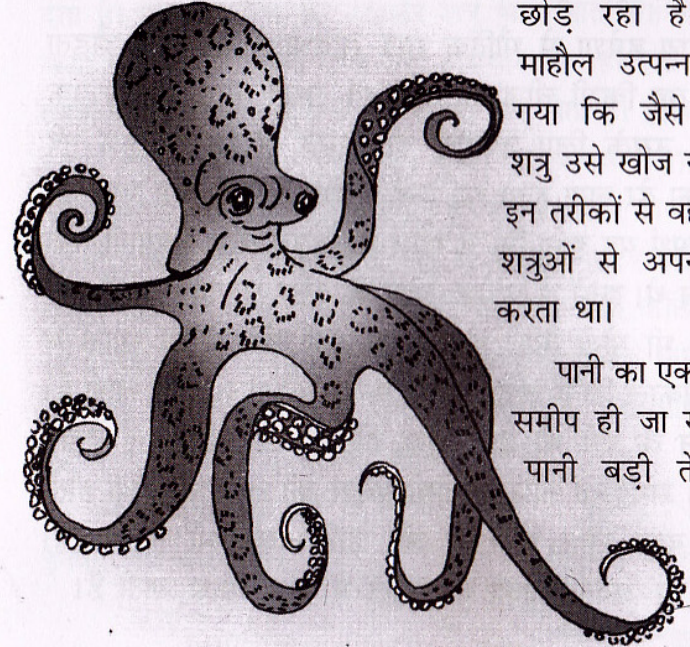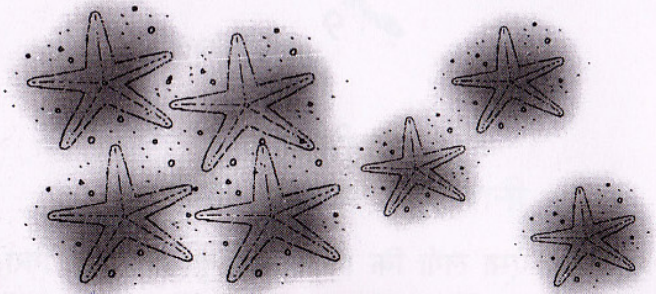
हिलोरें ले रहा था, जो कई लोगों को आकर्षित कर रहा था। अचानक पानी की सतह से एक जानवर प्रकट हुआ। यह जानवर बहुत विकराल लग रहा था। अजगर की तरह उसके आठ हाथ थे जो बड़े कठोर थे। उसके शरीर पर कई छोटी-छोटी टोपी जैसे वस्तुएं थीं। ऑक्टोपस! कोई चिल्लाया। सभी बच्चे किनारे की तरफ भागे। भूरा-भूरी ने देखा कि जानवर समुद्र में तैर रहा था।

मनुष्य हमेशा से भौतिक सुख-सुविधाओं की तरफ दौड़ता रहा है। वह किसी चीज को तभी तक पसंद करता है जब तक कि वह उसके लिए उपयोगी हो। समुद्र के किनारे कुछ गंदे खोलों का ढेर लगा हुआ था, उन्हें सुरक्षित ढंग से रखा गया था। इसका अर्थ यह हुआ कि ये खोल या कवच बहुत उपयोगी तथा मूल्यवान थे। इनमें से प्रत्येक खोल के अंदर मूल्यवान मोती होते हैं। जब भी मोती तैयार होता है तो उन्हें सीपियों या खोलों से बाहर निकाल लिया जाता है और कवच को फेंक दिया जाता है। आसमान के तारे भी बहुत सुंदर होते हैं। हम घंटों उन्हें देखते रहते हैं। समुद्र के नीचे भी इसी प्रकार की तारा मछलियां होती है। ये बहुत सुंदर होती हैं और हानिकारक भी नहीं होती। इसलिए ये अपने शत्रुओं के चंगुल में जल्दी फंस जाती हैं।

10
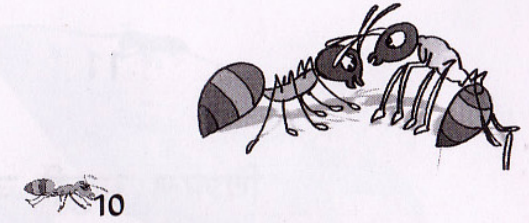
समुद्री ककड़ी व रतालू

एक विचित्र तरह का जीव जो देखने में ककड़ी की तरह होता है और ज्यादातर घूमता भी नहीं है और न ही प्रतिक्रिया करता है। समुद्र में पाया जाने वाला यह जीव, जब इसके शत्रु इस पर आक्रमण करते हैं तो, अपनी आंतों को बाहर निकाल देता है। इसकी आंतों को देखकर शत्रु भाग जाता है। यह बहुत कमजोर जीव है। इसके पास कोई हथियार भी नहीं होते, लेकिन आंतों को उगलने से यह अपनी सुरक्षा कर लेता है। इसकी आंतें दुबारा अपने आप बन जाती हैं। दूसरा आश्चर्यजनक जीव जो भूरा-भूरी ने देखा वह समुद्री रतालू है। इसका शरीर हाथी के पैर की तरह मोटा है। इसकी कोई जड़ या पत्तियां नहीं होती। इसकी बाहरी खाल में कांटे होते हैं। इसको पकड़ना बड़ा कठिन कार्य है। इसके कांटे पोरक्यूपाइन की तरह होते हैं। इसके कांटे बाणों की तरह हमला करते हैं। ये लिखने के काम आते हैं और इसकी बाहरी परत साज-सज्जा के काम आती है। इन्हीं आवश्यकताओं के लिए मनुष्य इनका वध करता है।
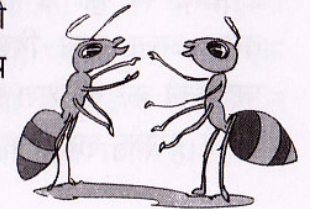
11 विशाल समुद्री जीव
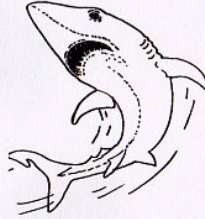
भूरे ने देखा कि बच्चे मछलियों को घरों में ला रहे थे। वे बहुत रंग-बिरंगी थीं, भूरा को वे पसंद आईं, सुनहरी मछली उसे बहुत अच्छी लगी। भूरा को लगा कि जैसे वह स्वयं भी समुद्र में है। उसने बहुत बड़ी और जानलेवा शार्क मछली को देखा जो बड़े उत्साह के साथ समुद्र में उछल-कूद कर रही थी, वह हाथी की तरह चल रही थी। निडर होकर तैर रही थी और शीशे की दीवारों को जोर से मार रही थी। भूरा सोचने लगा कि यदि ये दीवारें टूट जाएंगी तो हमारा क्या होगा? शार्क ने अपना मुंह मछली को निगलने के लिए खोला। भूरा ने शार्क के बड़े-बड़े दांत देखे जो भयानक थे और किसी भी चीज को काट सकते थे। शार्क शांतिपूर्वक शिकार के इंतजार में था। इस बीच उसने अपने पास से गुजरते हुए बड़े जानवर को नहीं देखा, वह भी शार्क की तरह ही था, किंतु उसके मुंह के पास से दो बड़े-बड़े कांटे के समान कोई चीज दिखाई दे रही थी। चूंकि वह ज्यादा खतरनाक जीव था इसलिए उसे देखकर शार्क वहां से भाग गया। 2 फीट की दूरी से दो बड़ी-बड़ी आंखों वाला जीव कांच की तरफ आता हुआ दिखाई दिया। सब लोग उत्सुकता से उसे पहचानने की कोशिश कर रहे थे। इसका सिर 2 फीट व्यास का है तो इसके शरीर का आकार क्या होगा? उसको कांच की
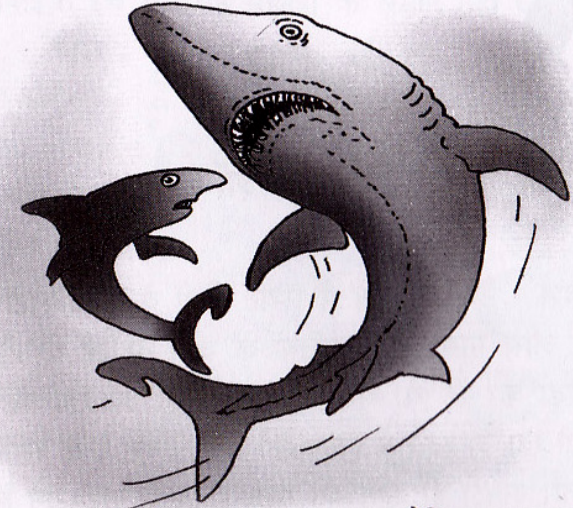
दीवार तक पहुंचने में बहुत समय लगा, लेकिन इसका शरीर पतला था और शार्क की तरह था। इसका बड़ा सिर दिखाने के लिए और शत्रुओं से रक्षा करने के लिए था। इसके साथ कुछ और शार्क आए जिनके शरीर पर तेंदुए की तरह काले और सफेद धब्बे थे। ये शार्क बहुत खतरनाक थे। इनमें इतनी शक्ति थी कि ये मछली पकड़नेवाली नावों को भी पलट सकते थे।

अगले टैंक में दंश रे (स्टिंग रे) थी, कुछ तैर रहीं थी तथा कुछ नीचे लेटी हुईं थीं। ये डोसे की तरह पतली थी तथा उनका सिर बहुत छोटा था, इनके पंख दिखाई नहीं देते थे। पूंछ की जगह इनके पास लंबा और मजबूत चाबुक जैसा अंग था। एक अंग नुकीले कांटे की तरह था जो दुश्मनों को घायल या मार भी सकता था, यहां तक कि इंसानों को भी मार सकता था। एक दूसरे तरह की दंश रे भी होती हैं जो न सक्रिय हैं और न आक्रामक, ये चट्टानों या छोटे पौधों के नीचे रहती हैं।

12

विद्युत शॉकर

दंश रे टैंक के तले में स्थित पौधों के पीछे लेटी हुई थी। इसके आस-पास कई प्रजातियों के जीव तैर रहे थे और आपस में क्रीड़ा कर रहे थे। भूरा को समझ नहीं आ रहा था कि यहां क्या हो रहा है। इतने में एक छोटी मछली दंश रे के समीप होकर निकली। अगले ही क्षण वह मछली दर्द से छटपटाने लगी और कुछ ही पलों में वह मर गई। दंश रे मछली के पास आई और उसे खा गई। इस दंश रे के शरीर से विद्युत शक्ति निकालने की क्षमता होती है। यह बिजली का करंट जैसा कुछ छोड़ती है। इसे विद्युत दंश रे कहते हैं।

13
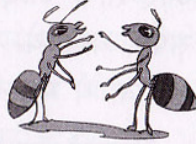
समुद्री घोड़ा

यहां पर बहुत से जीव-जंतु थे जो भूरा-भूरी का ध्यान आकर्षित कर रहे थे। एक ऐसा जीव था जिसने अपनी पूंछ के जरिए अपने शरीर को पेड़ से बांध रखा था और सीधा खड़ा था,

इसकी लंबाई 6 इंच थी। यह मछली के समान नहीं था बल्कि इसका सिर कुछ-कुछ घोड़े के सिर जैसा था। इसके शरीर पर पपड़ी जैसी त्वचा नहीं थी। इसके गलफड़े और पंख भी नहीं दिखाई दे रहे थे। इस जीव को समुद्री घोड़ा कहा जाता है। नर घोड़ा बड़ा डरपोक और मादा शांतिप्रिय होती है। घोड़े का कार्य मादा द्वारा दिए गए अंडों की देखभाल करना है।

पानी में एक और छोटी मछली तैर रही थी। एक बड़ी मछली उसका पीछा कर रही थी। जब बड़ी मछली को छोटी ने देखा तो अपनी रक्षा के लिए उसने शरीर को गुब्बारे

की तरह फुला लिया और गेंद की तरह बना लिया। अब वह फुफकारने लगी, अब कोई भी इसे छूने की हिम्मत नहीं कर सकता था। भूरा-भूरी इसको देखकर रोमांचित हो गए। इसका मांस जहरीला होता है इसलिए इसको कोई खाता नहीं है। बहुत देर हो गई थी किंतु लड़के वहां से जाने का नाम नहीं ले रहे थे। थोड़ी देर में बैग वाला लड़का, जिसके बैग में भूरा-भूरी थे, चलने लगा तो सभी लड़के उसके पीछे-पीछे चलने लगे। बैग वाला लड़का बहुत मोटा था और थक भी गया था। इसलिए वह एक चट्टान पर बैठ गया। बाकी बच्चे पुनः खेलने लगे। थोड़ी देर में बच्चों को अपने इस लीडर के चिल्लाने की आवाज आई तो उन्होंने देखा कि जिस चट्टान पर वह लीडर बैठा था वह खिसकने लग गई है। उनका लीडर सहायता के लिए चिल्ला रहा था। अब चट्टान चार टांगों पर खड़ी हो गई। एक तरफ से एक छोटा सिर बाहर को निकला। सबकी समझ में आ गया कि यह कोई चट्टान नहीं है बल्कि कोई समुद्री कछुआ है। अपने लीडर को बचाने के लिए जैसे ही एक लड़का पत्थर उठाकर कछुवे की तरह फेंकने वाला था कि मछली घर के चौकीदार ने उसे रोक दिया। चौकीदार कछुवे की तरफ गया और कछुवे को एक हल्की थपकी दी। कछुवे ने अपना सिर अंदर किया और बैठ गया। इस पर लड़का उतरा और कछुवे को धन्यवाद दिया।

14
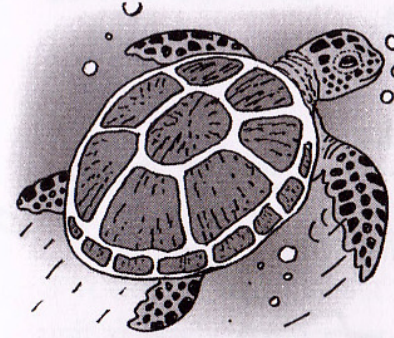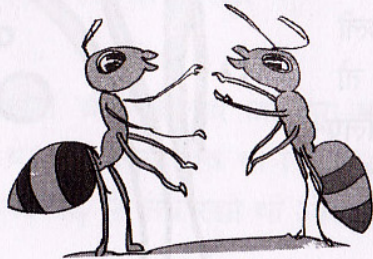
कछुवे का दुख

कछुआ एक सीधा-साधा जीव है। यह किसी को नुकसान नहीं पहुंचाता। अपने भोजन की व्यवस्था के अलावा यह कोई शरारत भी नहीं करता। यह एक पवित्र जीव है। किंतु मनुष्य बड़ी मात्रा में कछुओं को पकड़ते हैं और इनके मांस को खाते हैं। इसकी खाल का उपयोग साज-सज्जा के काम में लेते हैं। मनुष्य इस जीव के प्रति बड़ा निर्दयी है। कछुवे की खाल निकालने के लिए कुल्हाड़ी और तीखे हथियारों का उपयोग करते हैं। एक जीते-जागते जीव की ऐसी निर्मम हत्या और उसके टुकड़े करना कितना बुरा कार्य है आप इसकी कल्पना कर सकते हैं। अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए मनुष्य पशु से भी गया-बीता है। मनुष्य इसके अंडों को भी चुरा लेता है। इसके अंडे स्वादिष्ट होते हैं, होटलों में अंडों का खूब उपयोग होता है। मादा कछुआ समुद्र किनारे रेत में अंडे देती है और वहीं उन्हें छुपा देती है। परंतु मनुष्य और अन्य जानवर वहां भी इन्हें खोज लेते हैं। कछुओं की संख्या में कमी होने का यही कारण है। मनुष्य की लालची दृष्टि का ही परिणाम है कि पृथ्वी में इसी प्रकार के कई अन्य जीव-जंतु लुप्त होते जा रहे हैं। भूरा और भूरी को इन जीवों की स्थिति देखकर बड़ा दुख हुआ।

15

समुद्री सर्कस

तरण ताल के निकट बहुत भीड़ जमा थी। भीड़ में से रास्ता बनाकर बैग वाला लड़का तालाब के निकट खड़ा हो गया। भूरा-भूरी भी इस दृश्य को बड़े आराम से देखने लगे। तालाब के निकट एक आदमी खड़ा है, उसके पास एक टोकरी है जिसमें मछलियां रखी गईं हैं। कुछ आवाज निकालकर उसने मछलियों को तालाब में फेंक दिया। उसी समय एक डॉलफिन आई और उसने मछलियों को खा लिया। थोड़ा
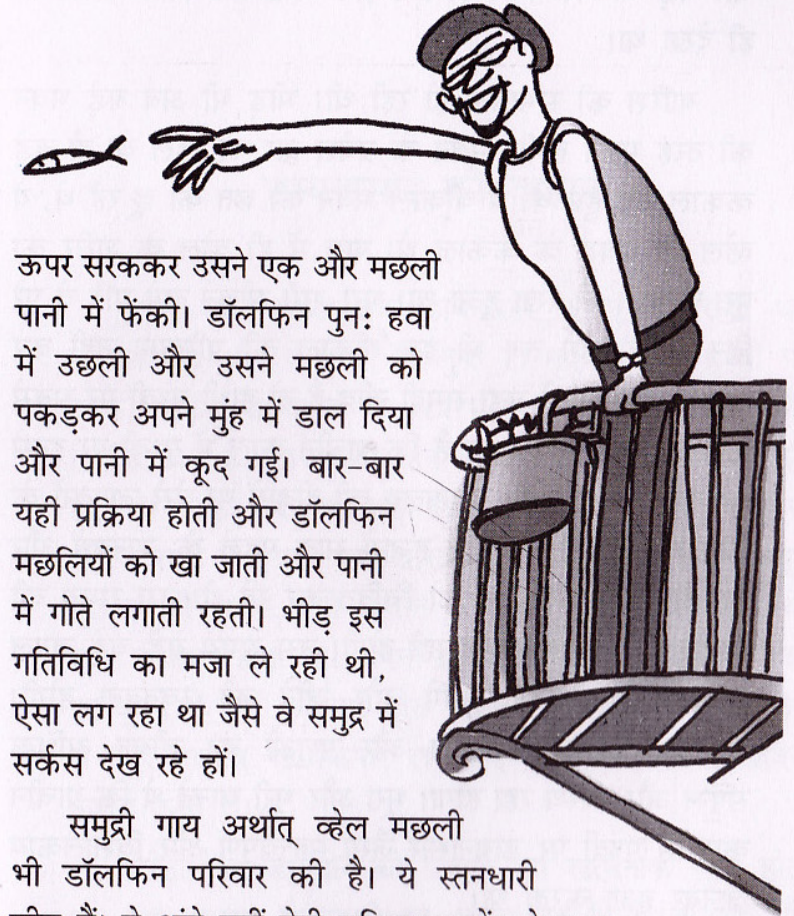
ऊपर सरककर उसने एक और मछली पानी में फेंकी। डॉलफिन पुनः हवा में उछली और उसने मछली को पकड़कर अपने मुंह में डाल दिया और पानी में कूद गई। बार-बार यही प्रक्रिया होती और डॉलफिन मछलियों को खा जाती और पानी में गोते लगाती रहती। भीड़ इस गतिविधि का मजा ले रही थी, ऐसा लग रहा था जैसे वे समुद्र में सर्कस देख रहे हों।

समुद्री गाय अर्थात् व्हेल मछली भी डॉलफिन परिवार की है। ये स्तनधारी जीव हैं। ये अंडे नहीं देती बल्कि बच्चों को जन्म देती हैं। व्हेल मछली सबसे बड़ा जीव है। यह गहरे समुद्र में रहती हैं। किंतु मनुष्य इन्हें यहां भी नहीं जीने देता। व्हेल की चर्बी और मांस खाया जाता है। इसकी बहुत मांग है, इसलिए आदमी इनका शिकार करता है। कानूनन इनके शिकार करने पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। भूरा-भूरी ने कभी व्हेल नहीं देखी

थी। बड़े जानवर के रूप में उन्होंने अभी तक सिर्फ हाथी को ही देखा था।

बारिश की संभावना हो रही थी। भीड़ भी अब बड़े भवन की तरह मुड़ने लगी। भवन के प्रवेश द्वार पर व्हेल के दो बड़े कंकाल रखे हुए थे। ये कंकाल भवन की छत को छू रहे थे, ये व्हेल के जबड़े के कंकाल थे। पास में ही व्हेल के शरीर का पूरा कंकाल भी रखा हुआ था। भूरा-भूरी सोचने लगे यदि वे पूरे दिन चलते रहेंगे तब भी इस कंकाल की परिक्रमा नहीं कर पाएंगे। व्हेल सबसे बड़ा समुद्री जीव है तो हाथी पृथ्वी पर सबसे बड़ा जीव है। कहा जाता है कि प्राचीन काल में पृथ्वी पर इनसे भी बड़े जीव होते थे, संग्रहालय की दीवारों पर ऐसे जानवरों के चित्र बने हुए थे। ये चित्र हजारों साल पहले के जानवरों और उस समय के पर्यावरण को चित्रित कर रहे थे। उस समय की स्थिति निश्चित ही भिन्न रही होगी। उस समय बड़े-बड़े जंगल होंगे, पानी के स्रोत होंगे और जीने की स्वतंत्रता होगी। पेड़-पौधे अर्थात् पर्यावरण और पशुओं का जीवन अधिक संपन्न और स्वस्थ रहा होगा। भूरा और भूरी जानते थे कि प्राचीन काल में पृथ्वी पर डायनासोर जैसा महत्त्वपूर्ण और विशालकाय जानवर हुआ करता था।

16
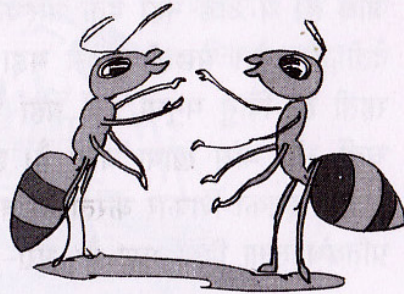
डायनासोर की कहानी

बहुत साल पहले तक डायनासोर जंगल का राजा था, लेकिन धीरे-धीरे ये पृथ्वी से लुप्त हो गए हैं। अब पृथ्वी पर इनकी संतति या वंशज के रूप में मगरमच्छ, छिपकली और गिरगिट बचे हैं। डायनासोर तीन मंजिली ईमारत के समान लंबे होते थे। इनकी गर्दन भी बड़ी लंबी होती थी, जो ऊंचे पेड़ों से पत्तियां खाने में इनकी मदद करती थी। इनकी लंबी और मजबूत पूंछ इनकी सबसे बड़ी ताकत थी। पांव इसके छोटे होते थे, शरीर विशाल होता था। अपनी इन विशेषताओं के कारण पृथ्वी पर घूमने में इन्हें कठिनाई होती थी। ये तालाब के किनारे रहते थे और तालाब के किनारे लगे हुए पेड़ों की पत्तियां खाकर गुजारा करते थे।

टिरेनोसौरस डायनोर की प्रजाति का खतरनाक जीव होता था। यह जानवर मांसाहारी था, चूंकि उन दिनों चिड़ियां और अन्य जानवर कम पाए जाते थे इसलिए टिरेनो अपने बच्चों को ही अपना भोजन बना लेता था। ये बहुत शक्तिशाली और तेज दौड़ने वाले होते थे और किसी भी प्रकार के जानवर को मार सकते थे। इनके नाखून तथा दांत बहुत लंबे होते थे जिनसे ये किसी भी दुश्मन को आसानी से मार सकते थे।
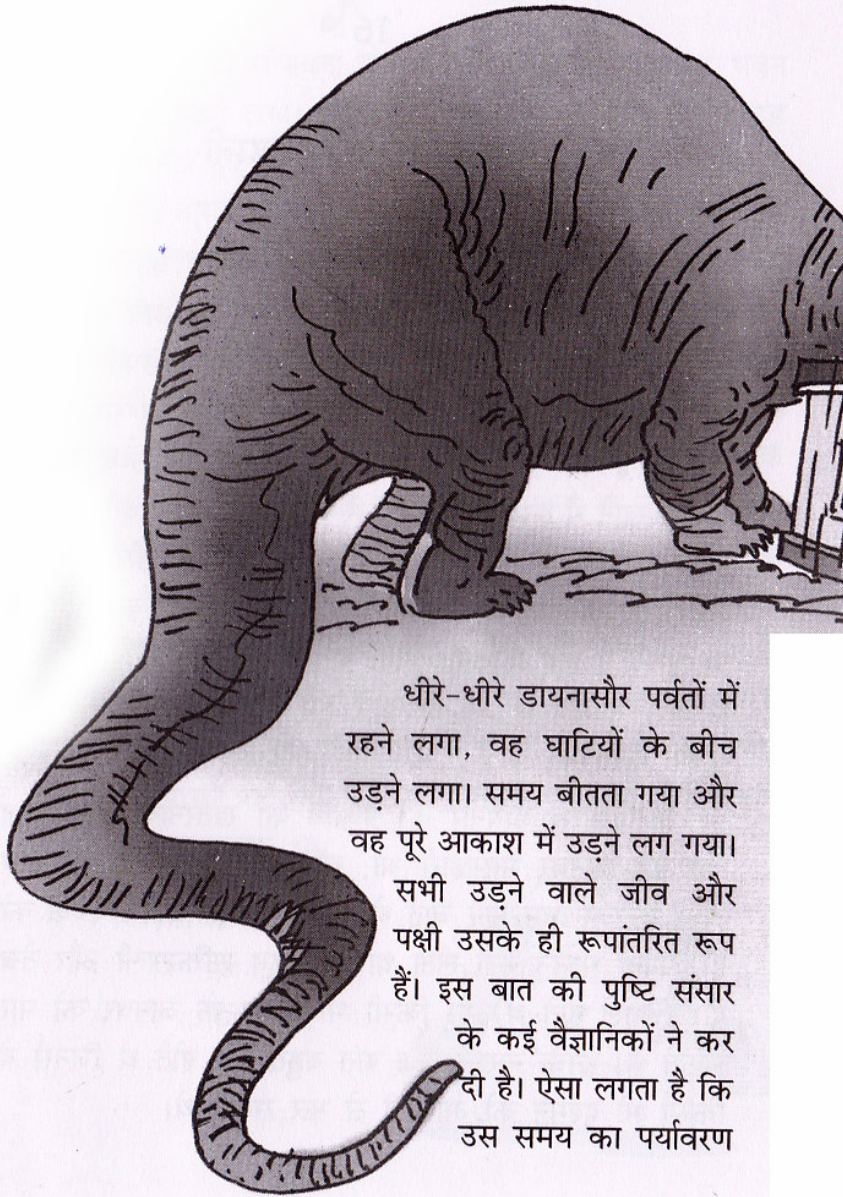
धीरे-धीरे डायनासौर पर्वतों में रहने लगा, वह घाटियों के बीच उड़ने लगा। समय बीतता गया और वह पूरे आकाश में उड़ने लग गया। सभी उड़ने वाले जीव और पक्षी उसके ही रूपांतरित रूप हैं। इस बात की पुष्टि संसार के कई वैज्ञानिकों ने कर दी है। ऐसा लगता है कि उस समय का पर्यावरण
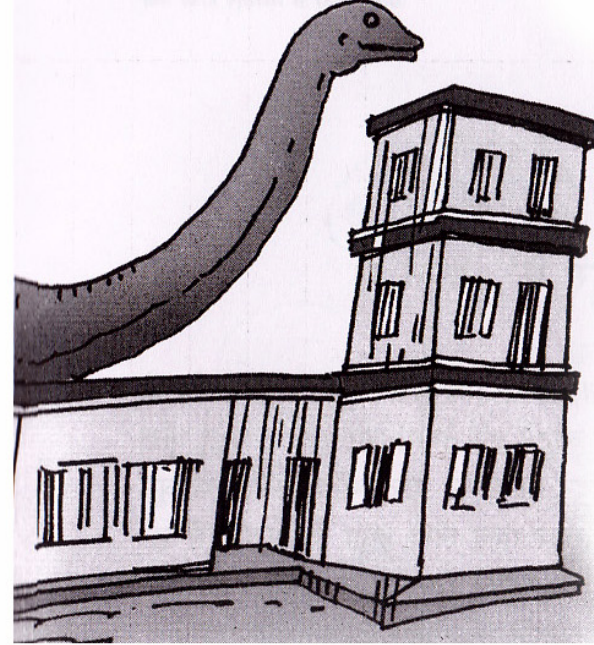
और परिस्थितियां ऐसी थीं जो शाकाहारी जावनरों के अनुकूल नहीं थी।

प्रागैतिहासिक संसार की यात्रा बड़ी रोमांचक थी। यह यात्रा शहर के बगीचे से शुरू होकर डायनोसौर के विशाल जंगल में समाप्त होती है। भूरा-भूरी ने पौधों और जानवरों की जीवन-शैली को वर्णित किया है। उन्होंने यह सिद्ध किया है कि प्रकृति जीवन के हर कानून को स्वयं नियंत्रित करती है। यह तो केवल मनुष्य है जो प्रकृति से लड़ने का प्रयास कर रहा है।

19

मंदिर के अहाते में

अंधेरा छाने लगा था, बच्चे अब थक चुके थे और बोर हो रहे थे। वे अब शहर को लौटने की तैयारी कर रहे थे। परंतु कुछ लोगों ने सलाह दी कि दिन छिपने से पहले मंदिर की तरफ घूम आओ, वहां पर बड़ा जोरदार मेला लगा हुआ है। भूरा-भूरी को यह विचार अच्छा लगा। वे अपने बिल में से निकले ही इसी प्रयोजन से थे कि मंदिर जाएंगे और मेले का लाभ उठाएंगे।
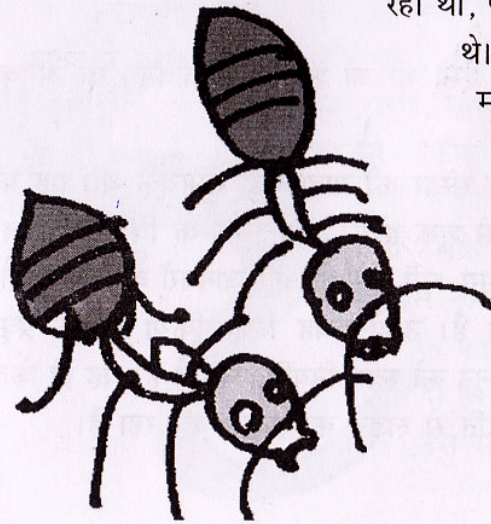
मंदिर रंग-बिरंगी रोशनी से चमक रहा था। आतिशबाजी हो रही थी, पटाखे छोड़े जा रहे थे। भीड़ बहुत थी। मंदिर के प्रवेश द्वार पर एक हाथी था जो आने-जाने वालों का स्वागत कर रहा था, हाथी को रंग-बिरंगे और चमकीले

आभूषणों से सजाया गया था। उसके सिर पर महावतों ने बड़ी छतरी लगा रखी थी।

हाथी मंदिर के चारों तरफ घूम रहा था। भूरा-भूरी को लगा कि अब बैग से बाहर आने का समय हो गया है। वे बच्चे के शरीर से होकर जमीन पर आ गए। जमीन पर उतरकर भूरे ने अपनी पत्नी का हाथ पकड़ लिया, दोनों भाग रहे थे। भीड़ उनके लिए कोई समस्या नहीं थी। भूरा हाथी की तरफ मुड़ने लगा, उसने भूरी को बताया कि हाथी के ऊपर चढ़कर मेला देखना

चाहिए और जब हाथी अपने घर को जाएगा तो वे नीचे उतरकर अपने बिल में चले जाएंगे।

समय के साथ मेला खत्म हो गया और हाथी अपने घर लौट गया। सूरज अस्त हो गया था, भूरा अपनी पत्नी के साथ बिल में घुस गया। भूरी को नींद भी आ रही थी। बच्चे अपने रोजमर्रा के काम में व्यस्त थे। पूरे दिन घूमने के बाद भूरा-भूरी संतुष्ट हो गए थे और सबको अनदेखा करते हुए अपने बिल में आराम करने लगे।